ऋणमोचक मंगल स्तोत्र

चतुवर्ग चिन्तामणि महाग्रंथ के अनुसार धन सम्बन्धी, ऋण-दोष दूर करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय 'मंगल साधना' है। मंगल साधना सम्पन्न करने के पश्चात् साधक सात मंगलवार तक नित्य ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करता है तो उसकी ऋण बाधा अवश्य ही समाप्त होती है और भविष्य में भी ऋण सम्बन्धा बाधाओं से मुक्ति प्राप्त होती है। एक माला मंगल मंत्र का जप करने के पश्चात् इस स्तोत्र का पाठ अवश्य सम्पन्न करें।

मंगल मंत्र

।। ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।।

ऋणमोचक मंगल स्तोत्रम्

।। मंगल भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनंदनः।।२।।
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्तापहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।३।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।४।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्।।५।।
स्तोत्रअंगारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पापि भवति क्वचित्।।६।।
अंगारक महाभाग भगवत् भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।७।।
ऋणरोगादिदारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यंतु मम सर्वदा।।८।।
अतिवक्र दुराराध्यः भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।९।।
विरंचिशक्रविष्णुनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः।।१०।।
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्रदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।११।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तोत्रं च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ।।१२।।

ऋण मोचन मंगल साधना सम्पन्न कर 'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र' का पाठ करने वाले हजारों साधकों को ऋण के कष्टकारक चुंगल से मुक्त होने के पत्र निरन्तर निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय को प्राप्त होते रहते है।